بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक20.05.2016 बैतुल फ़तूह लंदन।

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद के द्वारा शैतान के साथ निर्णायक युद्ध है परन्तु यदि हम अपने कर्मों से शैतान को अवसर दे रहे हैं कि हमारे बच्चों तथा नौजवानों और ओहदेदारों के व्यवहार के कारण शैतान सहानुभूति दिखाकर अपने वश में कर ले तो फिर ऐसे ओहदेदार चाहे वे पुरुष हैं अथवा महिलाएँ, मसीह मौऊद के सहायक नहीं हैं अपितु शैतान के सहायक हैं। अतः प्रत्येक ओहदेदार को विशेष रूप से यह प्रयास करना है कि उसने अपने आपको भी शैतान के हमले से बचाना है तथा जमाअत के लोगों को भी बचाना है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अल-नूर की 22 वीं आयत की तिलावत फ़रमाई जिसका अनुवाद इस प्रकार है कि ऐ वे लोगो! जो ईमान लाए हो, शैतान के पद्चिन्हों पर मत चलो और जो कोई शैतान के क़दमों पर चलता है तो निःसन्देह वह (शैतान) अश्लील तथा ना पसन्द बातों का आदेश देता है। यदि अल्लाह का फ़ज़्ल तथा उसकी रहमत तुम पर न हो तो तुममें से कोई एक भी कभी पवित्र न हो सकता, अल्लाह जिसे चाहे पवित्र कर देता है और अल्लाह बहुत सुनने वाला तथा स्थाई ज्ञान रखने वाला है।

अल्लाह तआला ने इस आयत के अतिरिक्त भी आदम की संतान तथा मोमिनों को शैतान से बचने तथा उसके मार्ग दर्शन पर न चलने का निर्देश फ़रमाया है। यह आदेश इस लिए है कि शैतान ख़ुदा तआला का अवज्ञाकारी है, अल्लाह तआला के आदेशों के विरुद्ध चलता है, उनसे बग़ावत करता है और यथार्थ यह है कि जो अल्लाह तआला का अवज्ञाकारी तथा उसके आदेशों के विरुद्ध चलने वाला हो, वह अपने पीछे चलने वालों को भी वही कुछ सिखाएगा जो स्वयं करता है और फिर इसका परिणाम यह होगा कि शैतान स्वयं तो नर्क का ईंधन है ही, वह अपने पीछे चलने वालों को भी नर्क का ईंधन बना देता है। यह सब कुछ खोलकर बयान करके अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इंसानों को इसके बाद भी समझ नहीं आती कि शैतान तुम्हारा खुला खुला दुश्मन है। अतः इस शत्रु से बचो। एक तो वे लोग हैं जिनको न दीन की कुछ चिंता है, न उनको यह पता है कि नर्क क्या है तथा स्वर्ग क्या है? न उनको ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर विश्वास है। वे न तो दीन की बातों को समझते हैं, न समझना चाहते हैं। ऐसे लोग तो शैतान के पीछे चलने वाले हैं ही परन्तु ऐसे भी होते हैं जो ईमान का दावा करके, अपने आपको मोमिन कह कर फिर शैतान के पीछे चलने वाले हैं अथवा विवेक के बिना कुछ काम करके अथवा अल्लाह तआला की गोद में आने का पूरा प्रयास न करके शैतान के पद्चिन्हों पर चलने वाले बन जाते हैं या बन सकते हैं। इस लिए अल्लाह तआला इस आयत में मोमिनों को सावधान कर रहा है, इन्हें फ़रमा रहा है कि शैतान के क़दमों पर न चलो। मोमिनों को यह निर्देश है कि यह न समझो कि हम ईमान ले आए हैं, हमने इस्लाम क़बूल कर लिया है इस लिए अब हम निश्चिंत हो गए हैं। नहीं, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अब भी शैतान का ख़तरा उसी प्रकार है। एक मोमिन भी शैतान के पंजे में गिरफ़तार हो सकता है जिस प्रकार एक ग़ैर मोमिन हो सकता है। इस लिए प्रत्येक मोमिन का दायित्व है कि शैतान के आक्रमण से बचने के लिए अल्लाह तआला को सदैव याद रक्खें। यह सब कुछ आजकल हम दुनया में होता देख रहे हैं कि ईमान का दावा करने वाले भी शैतान के पीछे चल रहे हैं जबकि अल्लाह तआला ने चेतावनी दी थी, सतर्क किया था। उदाहरणतः क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो व्यक्ति किसी मोमिन की जान बूझकर हत्या कर दे तो उसका दंड नर्क के रूप में होगा। अब आजकल जो कुछ मुसलमान दुनया में हो रहा है, यह क्या है? आपस में एक दूसरे की हत्या करके शैतान के पीछे ही

चल रहे हैं। फिर सामूहिक रूप से भी बिना कारण के किसी की हत्या जो कट्टर पंथी विभिन्न हमलों में करते हैं, ये सब शैतानी कर्म हैं तथा नर्क की ओर ले जाने वाले हैं जबकि शैतान के बहकावे में आकर जन्नत में जाने के नाम पर यह सब कुछ किया जाता है। शैतान तो यह कहता है कि यह काम करो तुम जन्नत में जाओगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह काम करोगे तो जन्नत में नहीं जाओगे क्यूँकि तुम शैतान के पीछे चल रहे हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आवश्यक नहीं कि केवल कट्टर पंथी तथा हत्यारे ही शैतान के पद्चिन्हों पर चलने वाले हैं बल्कि इंसान जब अल्लाह तआला के प्रत्यक्षतः किसी छोटे से छोटे आदेश से भी दूर जाता है तो शैतान की ओर बढ़ रहा होता है। अतः अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता है। शैतान जब इंसानों को बहकाता है, बुराईयों की प्रेरणा देता है, अल्लाह तआला के आदेशों की अवज्ञा की ओर ले जाता है, तो खुलकर यह नहीं कहता कि अल्लाह तआला से दूर जाओ, ये और ये बुराईयाँ करो बल्कि नेकी की आड़ में बुराईयों की ओर ले जाता है। यह आयत जो मैंने तिलावत की है यह इस बात पर भी प्रकाश डाल रही है कि बुराईयाँ किस प्रकार फैलती हैं तथा किस प्रकार बुराई एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलते फैलते एक विशाल क्षेत्र को अपनी लपेट में ले लेती है, शैतान के क़दमों पर चलता है इंसान। एक क़दम के बाद जब दूसरे क़दम पर इंसान अपने क़दम जमाता है तो इसका अर्थ यह होता है कि बुराईयों को फैला रहा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस समाज में पर्दे के विरोध में बहुत कुछ कहा जाता है, उनके विचार में यह कहना कोई बुराई नहीं, इस लिए ये कहते हैं कि इसके बारे में शरीअत के आदेश की आवश्यकता नहीं थी। कुछ लड़कियाँ हीन भावनाओं का शिकार होकर कि लोग क्या कहेंगे, पर्दे में ढीली हो जाती हैं। परन्तु उस समय पर्दा उतारने वाली लड़की तथा महिला को यह ध्यान नहीं रहता कि यह तो वह आदेश है जिसका क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन है। माँ बाप को भी बचपन से ही लड़कियों में ये बातें पैदा करनी चाहिएं कि लाज, तुम्हें इस्लाम के आदेशानुसार काम न करने पर आनी चाहिए, न कि अल्लाह तआला के आदेशों को मानकर। इसी प्रकार लड़कों में भी स्वतंत्र समाज के कारण कुछ बुराईयाँ हैं जो चुपके से प्रवेश करती हैं और फिर जब एक बुराई में ऐसे लड़के लिप्त हो जाते हैं तो अन्य बुराईयाँ भी उनमें आनी शुरू हो जाती हैं, उनमें भी लिप्त हो जाते हैं। अतः शैतान से बचने के लिए तो घरों में ही ऐसे मोर्चे बनाने की आवश्यकता है कि उसके प्रत्येक हमले से न केवल बचा जाए बल्कि उसके हमले का उसे जवाब भी दिया जाए। शैतान के प्यार को प्यार समझकर उसे जीवन में प्रवेश न करने दें अपितु हर समय इस्तिग़फ़ार करते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने का हर अहमदी को प्रयास करना चाहिए। सबसे बड़ी शरण शैतान से बचने की अल्लाह तआला ही है तथा इस्तिग़फ़ार ही वह साधन है जिससे अल्लाह तआला की शरण में इंसान आ सकता है। कोई इंसान भी जानते बूझते हुए किसी बुराई की ओर नहीं जाता। शैतान नेकियों का लालच देकर ही इंसान को निकालता है अथवा नेकियों का लालच देकर ही एक मोमिन को अल्लाह तआला की शरण से निकाला जा सकता है। अतः इस समाज में अहमदियों को विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है जहाँ स्वतंत्रता के नाम पर लड़की लड़के का स्वतंत्र रूप से मिलना तथा एकांत में मिलना कोई बुराई नहीं समझा जाता। फिर केवल नादान लड़के लड़कियों के कारण बुराईयाँ पैदा नहीं हो रही होतीं बल्कि यह भी देखने में आया है कि शादी शुदा लोगों में भी स्वतंत्रता एंव मित्रता के नाम पर घरों में आना जाना, बिना रोक टोक आना जाना, समस्याएँ उत्पन्न करता है और घर उजड़ते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- बुराईयों में से आजकल एक टी वी है, इन्टर नैट है। यही कुछ बुराईयाँ हैं, अधिकांश घरों का निरीक्षण कर लें बड़े से लेकर छोटे तक सुबह फ़ज्र की नमाज़ इस कारण से समय पर नहीं पढ़ते कि रात देर तक या तो टी वी देखते रहे अथवा इन्टरनैट पर बैठे रहे, अपने प्रोग्राम देखते रहे, परिणाम स्वरूप सुबह आँख नहीं खुली बल्कि ऐसे लोगों को ध्यान भी नहीं होता कि सुबह नमाज़ के लिए उठना है और ये दोनों चीज़ें तथा इस प्रकार की व्यर्थ गतिविधियाँ हैं कि एक आध बार आपकी नमाज़ें नहीं छुड़वातीं बल्कि जिनको आदत पड़ जाए उनका दैनिक यह नियम है कि रात देर तक ये प्रोग्राम देखते रहेंगे या इन्टरनैट पर बैठे रहेंगे और सुबह की नमाज़ के लिए उठना उनके लिए कठिन होगा बल्कि उठेंगे ही नहीं बल्कि कुछ ऐसे भी हैं जो महत्ता ही नहीं देते नमाज़ को। नमाज़ जो एक मूल चीज़ है, जिसकी हर अवस्था में अदायगी आवश्यक

है, यहाँ तक कि युद्ध, कठिनाई और बीमारी की स्थिति में भी, चाहे बैठकर नमाज़ पढ़े इंसान, लेटकर पढ़े अथवा जंग की अवस्था में या सफ़र की हालत में कसर करके पढ़े परन्तु हर हाल में पढ़नी है और सामान्य अवस्था में तो पुरुषों को जमाअत के साथ तथा महिलाओं को भी समय पर पढ़ने का आदेश है परन्तु शैतान केवल एक दुनया के प्रोग्राम के लालच में नमाज़ से दूर ले जाता है। कई घरों में इस कारण से बेचैनी है कि बीवी के हक़ भी अदा नहीं हो रहे और बच्चों के हक़ भी अदा नहीं हो रहे। इस लिए पुरुष टी वी और इन्टरनैट पर अश्लील प्रोग्राम देखने में व्यस्त रहते हैं। अतः एक अहमदी घराने को इन समस्त बीमारियों से बचने का प्रयास करना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मोमिनों को शैतान के हमलों से बचाने की कितनी चिंता होती थी। आपने हमें यह दुआ सिखाई है कि ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दे, हमारा सुधार कर दे तथा हमें सलामती के मार्ग पर चला और हमें अन्धेरों से मुक्ति देकर नूर की ओर ले जा तथा हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अश्लीलता से बचा और हमारे लिए हमारे कानों में, हमारी आँखों में, हमारी पत्नियों में और हमारी संतानों में बरकत रख दे तथा हम पर कृपा के साथ व्यवहार कर। निःसन्देह तू ही है, तू ही तौबा क़बूल करने वाला तथा बार बार दया करने वाला है और हमें अपनी नेअमतों का शुक्र करने वाला और इनका शुभ वर्णन करने वाला तथा उनको स्वीकार करने वाला बना और ऐ अल्लाह! हम पर नेअमतें पूरी फ़रमा। इस प्रकार यह दुआ है जो दुनया के अनुचित मनोरंजन से भी रोकने के लिए है, दूसरे हर प्रकार के व्यर्थ कामों से रोकने के लिए है, शैतान के हमलों से रोकने के लिए है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने हमें एम टी ए प्रदान किया है। अल्लाह तआला ने हमें जमाअत के रूहानी ज्ञान वर्धक प्रोग्रामों के लिए वैब साईट भी प्रदान की है। यदि हम अधिक ध्यान इस ओर करें तो फिर ही हमारा ध्यान इस ओर रहेगा जिसके द्वारा हम अल्लाह तआला के निकट होने वाले होंगे और शैतान से बचने वाले होंगे। इस बात को प्रत्येक अहमदी घर को अनिवार्य और आवश्यक बनाना चाहिए कि तमाम घर के लोग मिलकर हर सप्ताह कम से कम एम टी ए पर ख़ुत्बः अवश्य सुना करें तथा इसके अतिरिक्त कम से एक घंटा रोज़ाना एम टी ए के अन्य प्रोग्राम भी देखें। इसके अनुसार जो भी करेगा निःसन्देह जहाँ दीनी लाभ प्राप्त होगा और शैतान से भी दूरी होगी, अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने की ओर ध्यान आकर्षित होगा, घरों की शांति भी इसके द्वारा मिलेगी तथा उसमें बरकत भी पैदा होगी। जैसा कि अल्लाह तआला ने, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ में हमें सिखाया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- माँ बाप का यह भी दायित्व है कि बच्चों को मस्जिदों से जोड़ें, ज़ैली तंज़ीमों के प्रोग्रामों में शामिल कराएँ। यहाँ मैं ज़ैली तंज़ीमों से भी कहूँगा और जमाअती निज़ाम से भी बल्कि ज़ैली तंज़ीमों को विशेष रूप से इस लिए कि अतफ़ाल और नौजवान ख़ुद्दाम को संभालना आवश्यक है, नासिरात और नौजवान लजना को संभालना आवश्यक है। यह बहुत बड़ा दायित्व है ज़ैली तंज़ीमों का कि उन्हें जमाअत के साथ व्यापक रूप से जोड़ें। ख़ुद्दाम अपनी ऐसी टीमें बनाएँ जो विभिन्न स्वभाव के लोगों, नौजवानों को अपने साथ जोड़ने वाली हों। ओहदेदार अपने व्यवहार इस प्रकार के रक्खें कि प्यार से उन्हें दीन के साथ जोड़ें। हमने जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है तो इस कारण से कि इस ज़माने में मसीह मौऊद के द्वारा शैतान के साथ निर्णायक युद्ध है परन्तु यदि हम अपने कर्मों से शैतान को अवसर दे रहे हैं कि हमारे बच्चों तथा नौजवानों और ओहदेदारों के व्यवहार के कारण शैतान सहानुभूति दिखाकर अपने वश में कर ले तो फिर ऐसे ओहदेदार चाहे वे पुरुष हैं अथवा महिलाएँ, मसीह मौऊद के सहायक नहीं हैं अपितु शैतान के सहायक हैं। अतः प्रत्येक ओहदेदार को विशेष रूप से यह प्रयास करना है कि उसने अपने आपको भी शैतान के हमले से बचाना है तथा जमाअत के लोगों को भी बचाना है।

अतः अल्लाह तआला ने जो कृपा की है उसे समझने की आवश्यकता है, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति की आवश्यकता है। इस प्रकार प्रत्येक विवेक शील बुद्धिमान अहमदी को, नौजवान लड़कों तथा लड़कियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि उन पर अल्लाह तआला ने दया करते हुए यह उपकार किया है कि उन्हें अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी अथवा अहमदी घराने में पैदा किया। इस लिए उसने अपने किसी बड़े अथवा तथाकथित बुज़ुर्ग या ओहदेदार के व्यवहार के कारण अपने आपको दीन से दूर नहीं ले जाना बल्कि शैतान को पराजित करने में मसीह मौऊद का सहायक बनना है तथा

इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ करनी है।

इसी प्रकार विशेष रूप से वे जिनके हवाले किसी दीन की सेवा का काम किया गया है, लोगों के मार्ग दर्शन तथा प्रशिक्षण का काम जिनके हवाले है, अपनी कथ्नी करनी को अल्लाह तआला की इच्छानुसार ढालने का प्रयास करें और अल्लाह तआला से, विशुद्ध होकर दुआ करें कि अल्लाह तआला उनके कारण किसी को शैतान की झोली में न जाने दे बल्कि किसी प्रकार भी, जमाअत का कोई भी आदमी शैतान के पीछे चलने वाला न हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान दिलाते हुए एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने सदैव के लिए इस्तिग़फ़ार की व्यवस्था कराई है कि इंसान प्रत्येक गुनाह के लिए चाहे वह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष हो, चाहे उसकी जानकारी में हो अथवा न हो, और हाथ और पाँव और ज़बान और नाक और कान और आँख तथा हर प्रकार के गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करता रहे। फ़रमाया कि आजकल आदम अलैहिस्सलाम की दुआ पढ़नी चाहिए। वह दुआ क्या है? رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَ تَرْ حَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ अर्थात- ऐ हमारे रब्ब हमने अपनी जानों पर अत्याचार किया यदि तू हमे क्षमा नहीं करेगा और हम पर दया नहीं करेगा तो हम हानि उठाने वालों में से हो जाएँगे। फिर एक स्थान पर उपदेश देते हुए आप अलै. ने फ़रमाया कि-

मित्रो! ख़ुदा तआला के आदेशों की अवहेलना मत करो। वर्तमान फ़लसफ़े का विष तुम पर प्रभाव न डाले। एक बच्चे के समान होकर उसके आदेशों के नीचे चलो। नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो कि वह समस्त शक्तियों की चाबी है। और जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो ऐसा न कर कि मानो रस्म अदा कर रहा है बल्कि नमाज़ से पहले जैसे ज़ाहिर में वज़ू करते हो ऐसे ही आंतरिक वज़ू भी करो तथा अपने विचारों को अल्लाह के अतिरिक्त ध्यानों से धो डालो। तब तुम दोनों वज़ुओं के साथ खड़े हो जाओ तथा नमाज़ में बड़ी दुआएँ करो और रोना और गिड़गिड़ाना अपनी आदत करो ताकि तुम पर दया की जाए, सत्य धारण करो, सत्य ग्रहण करो कि वह तुम्हें देख रहा है सदैव प्रत्येक मामले में सच्चाई धारण करो। प्रत्येक मामले में यह हो कि अल्लाह तआला मुझे देख रहा है, वह देख रहा है कि तुम्हारे दिल कैसे हैं, क्या इंसान उसको भी धोखा दे सकता है, क्या उसके सामने भी मक्कारियाँ पेश की जा सकती हैं। घोर पापी मनुष्य अपने दुष्कर्म इस सीमा तक पहुंचाता है कि मानो ख़ुदा नहीं, तब वह बहुत जल्दी नष्ट किया जाता है तथा ख़ुदा तआला को उसकी तनिक भी चिंता नहीं होती। फ़रमाया- मित्रो! इस संसार की कोरी तर्क शीलता एक शैतान है तथा इस दुनया का केवल फ़लसफ़ा एक इबलीस है। केवल तर्क, लॉजिक और कारण, ये जो चीज़ें हैं ये सब शैतान की बातें हैं। केवल तर्क और दर्शन-शास्त्र के अनुसार चलोगे तो फिर ईमान का नूर घट जाएगा तथा यह अवज्ञा पैदा करता है तथा लगभग नासतिकता तक पहुंचाता है। इस लिए तुम स्वयं को इससे बचाओ और ऐसा दिल पैदा करो जो निर्धन और दुर्बल हो तथा बिना किसी आना कानी के अल्लाह तआला के आदेशों को मानने वाले बनो जैसा कि बच्चा अपनी माँ के कहने को मानता है। क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाएँ तक़्वा के उच्च स्तर तक पहुंचाती हैं उनकी ओर ध्यान करो तथा उनके अनुसार स्वयं को बना लो।

अल्लाह तआला करे कि हम शैतान के क़दमों पर चलने से बचने वाले हों। ख़ुदा तआला के आगे झुकते हुए उससे सहायता मांगते हुए उसके आदेशानुसार चलने वाले हों, क़ुरआन-ए-करीम के अनुसार काम करने वाले हों और इस बात पर धन्यवाद करने वाले हों कि अल्लाह तआला ने हमें अपने इस दूत को मानने की शक्ति प्रदान की जिसने शैतान को पराजित करना है। अल्लाह तआला करे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से की हुई बैअत की प्रतिज्ञा का हक़ अदा करते हुए शैतान के प्रत्येक हमले को निष्फल एंव असफल करने वालों में शामिल हो जाएँ। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।